आचार्य श्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूंगरगढ़

दूरभाष नं. 01565–224600, 224900

ई–मेल :– **jstdgh01565@gmail.com**

साधक का लक्ष्य : वीतरागता का विकास – युवाचार्य महाश्रमण

–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 26 जनवरी : तेरापंथ भवन के प्रज्ञासमवसरण में जनमेदिनी के मध्य आध्यात्मिक प्रवचन के दौरान युवाचार्य महाश्रमण ने कहा उत्तराध्ययन सूत्र हमें विकारों को त्यागने की बात कहता है। क्रोध, मान, माया, लोभ, शोक, ये सारे विकार है। विकारों का त्याग करके हम सब वीतरागता का विकास करें। कामना, लोभ, आकांक्षा अपराध के मूल है। गृहस्थ पूर्णतया निष्कांक्ष नही हो सकता किन्तु इच्छा परिमाण करें। फल प्राप्ति की आकांक्षा आने पर साधना तेजस्वी नहीं रह पाती। दशवेंकालिक सूत्र में हमें कहा गया है निर्जरा के सिवाय अन्य किसी उद्देश्य या लक्ष्य के लिए तपस्या न करें।

गीता के बारहवें अध्याय में इष्ट भक्त का प्रकरण चला है। ऐसी अनेक बाते बताई गयी है जिससे चेतना भावनात्मक स्तर पर विशुद्ध हो जाती है और वह भक्त श्री कृष्ण को प्रिय होता है, जो अनुकूलता में हर्षित नहीं होता, प्रतिकूलता में दुःखी नहीं बनता। जो शोक नहीं करता, लोभ,आकांक्षा, इच्छा नहीं रखता, फल की आकांक्षा, नही करता।

आचार्य तुलसी द्वारा रचित विजय–गीत का संगान करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने बताया जो व्यक्ति समस्याओं, कठिनाईयों में नहीं घबराता, जीवन की प्रतिकूल स्थितियों में फूल बनाकर मुस्कुराना जानता है वह विजयी बनता है। वह अभय, निर्मल, निरामय और हिमालय के समान अटल बनता है। मुनि हेमराजजी द्वारा सम्वत् 1879 में रचित आचार्य भारीमालजी के जीवन–चरित्र के आख्यान को आज पूरा किया। मुनिश्री दिनेश कुमार ने कहा कायोत्सर्ग से व्यक्ति धर्म ध्यान व शुक्ल ध्यान की ओर अग्रसर होता है।

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक